गतिविधि - 3

मूल्य स्पष्टीकरण

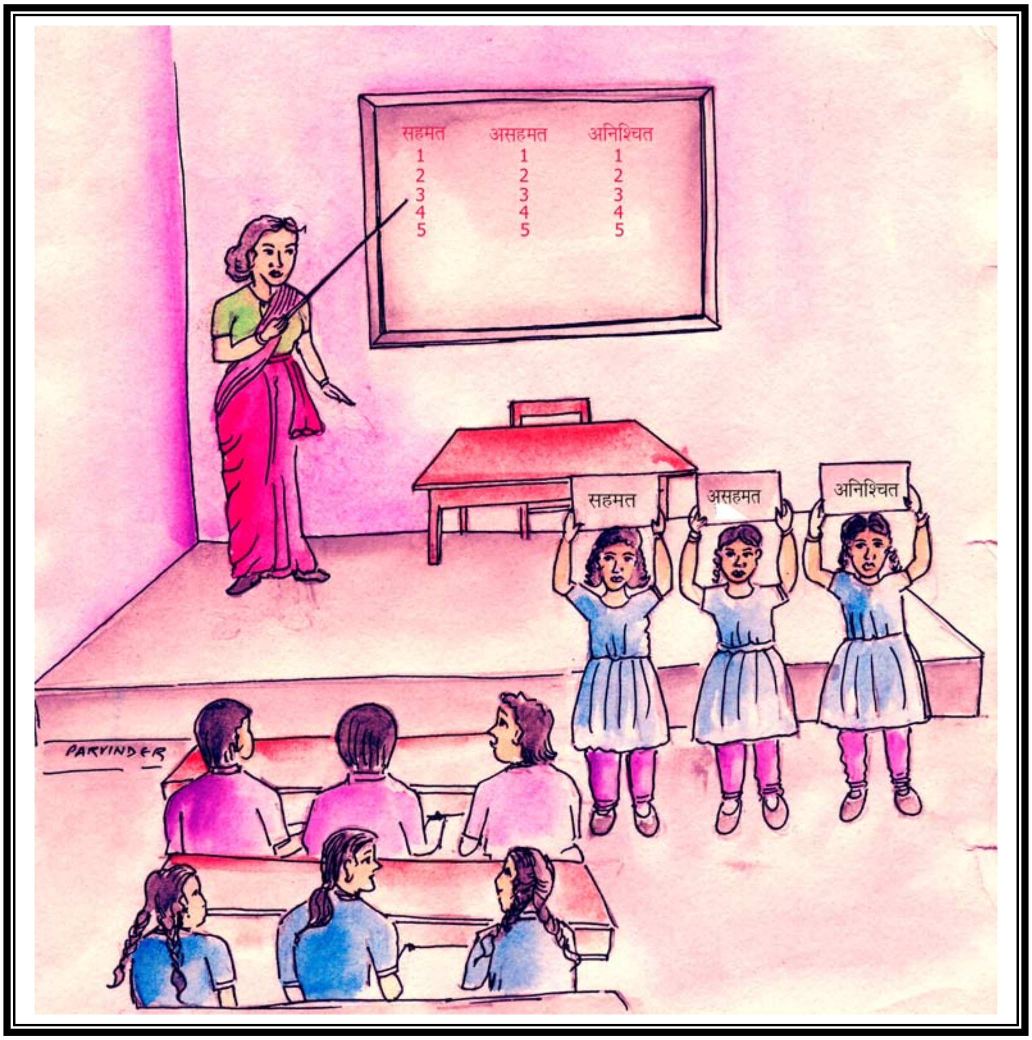

गतिविधि - 3

मूल्य स्पष्टीकरण
(Value Clarification)

व्यक्ति की मनोवृत्ति मान्यताओं और क्रिया-कलापों को निर्धारित करने वाले मानदण्डों को मूल्य कहते हैं। मूल्य व्यक्ति के व्यवहार और निर्णय क्षमता को प्रभावित करते हैं। किसी भी मूल्य को गलत या सही अथवा अच्छा या बुरा नहीं कहा जा सकता। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह मूल्य सापेक्ष दृष्टि से विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करे। मूल्य स्पष्टीकरण के माध्यम से अध्यापक को विद्यार्थियों के सामने सम्बन्धित समस्या के सभी संभावित विकल्प रख कर उनमें विकल्पों का मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। इस गतिविधि के अन्तर्गत विद्यार्थियों को विभिन्न मूल्यों और आस्थाओं का परीक्षण और स्पष्टीकरण करने का अवसर दिया जाता है। इस तरह इस गतिविधि के आयोजन से विद्यार्थी में सोचने, निर्णय लेने व समस्या का समाधान करने के कौशल विकसित होते हैं।

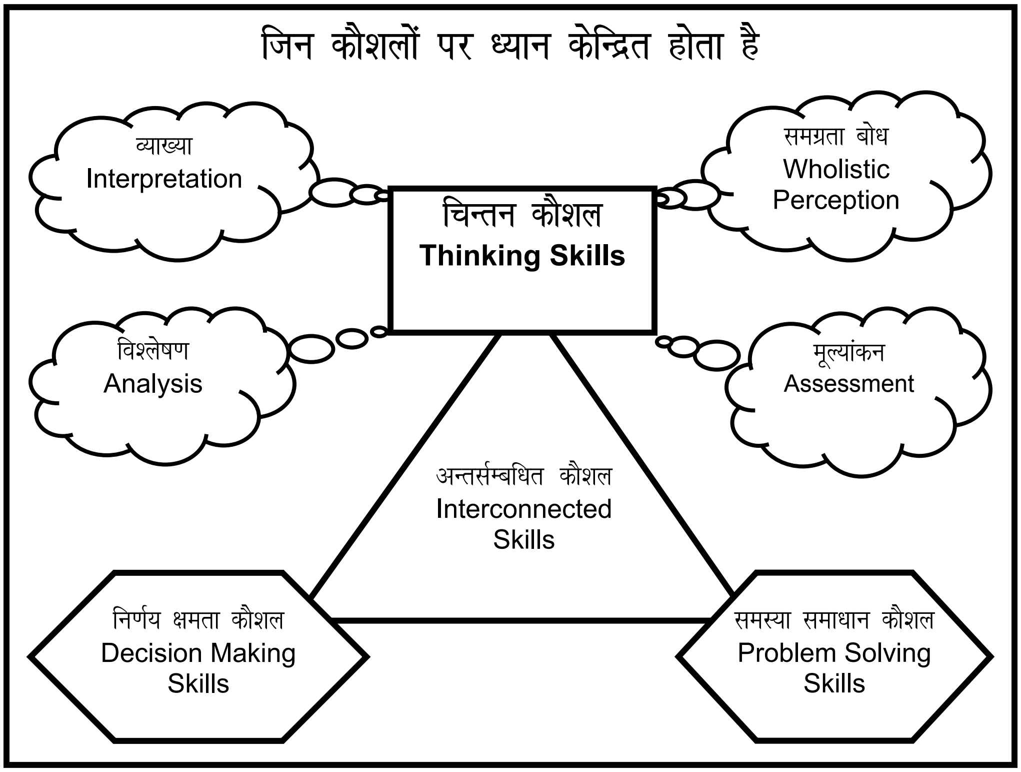

उद्देश्य

1. भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप छात्रों में किशोरावस्था प्रजनन व यौन स्वास्थ्य **(ARSH)** सम्बन्धी विषयों के प्रति स्वस्थ एवं उत्तरदायित्वपूर्ण दृष्टिकोण पैदा करना।
2. किशोरों को **ARSH** सम्बन्धी विषयों पर अपनी मान्यताएं, मूल्य और दृष्टिकोण निर्मित करने का अवसर प्रदान करना।
3. उनमें सोचने-समझने, निर्णय लेने व समस्या का निदान खोजने की क्षमता का कौशल विकसित करना।

लक्ष्य समूह

सातवीं कक्षा से बारहवीं कक्षा के छात्र छात्राएं।

वांछित सुविधाएं

विद्यालय में सामान्यतः उपलब्ध स्थान व अन्य सुविधाएं जैसे चॉक के टुकड़े, श्यामपट, कागज या चार्ट इत्यादि।

समय

पन्द्रह दिन में या मास में एक बार, एक घण्टा

प्रक्रिया

1. मूल्य स्पष्टीकरण गतिविधि का आयोजन कक्षा 7 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए किया जा सकता है। परन्तु इस गतिविधि का आयोजन यदि छोटे समूह में या एक समय पर एक ही कक्षा में किया जाए तो इस गतिविधि का प्रभाव अधिक हो सकता है।
2. यदि गतिविधि का आयोजन अधिक छात्रों के लिए किया जाना हो तो 20-25 छात्रों के छोटे समूह को गतिविधि में सक्रिय रूप से शामिल कर अन्य छात्रों को दर्शक के रूप में सम्मिलित करना चाहिए।
3. यदि इस गतिविधि को क्लास स्तर पर किया जाना है तो सारी कक्षा को इसमें सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

4. मूल्य स्पष्टीकरण गतिविधि के आयोजन की कई विधियां हैं इनमें से दो विधियाँ निम्नलिखित हैं :

क) परिचर्चा (Discussion)

1. परिचर्चा विधा के अन्तर्गत किसी भी कथन/ धारणा के आलोचनात्मक मंथन के बाद समूह के कुछ सदस्य अपनी 'सहमति', कुछ 'असहमति' जताएंगे व कुछ इस विषय में 'निर्णय नहीं' ले पाएंगे जिसे 'अनिश्चित' कहा जाएगा।

2. अध्यापक कागज के तीन टुकड़ों पर 'सहमत' 'असहमत' और 'अनिश्चित' लिखकर, जिस कमरे में गतिविधि का आयोजन किया जाना है, की दीवार पर तीन अलग-अलग कोनों पर चिपका दें।

3. अध्यापक द्वारा एक कथन/वक्तव्य को जोर से पढ़ा जाए व श्याम पट्ट पर लिख दिया जाए। उदाहरण के लिए 'यौन शिक्षा 10+1 व 10+2 के सभी छात्रों को अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए'।

4. उसके बाद अध्यापक विद्यार्थियों की इस कथन पर प्रथम प्रतिक्रिया के अनुरूप 'सहमत', 'असहमत' व 'अनिश्चित' में विभाजित कर लें। अर्थात् कथन सुनते ही यदि विद्यार्थी को लगे की वह सहमत है तो वह 'सहमत' लिखे स्थान पर जाए तथा यदि वह असहमत है तो 'असहमत' लिखे स्थान पर। उसी प्रकार 'अनिश्चित' के स्थान पर वे विद्यार्थी जाएं जो कोई निर्णय नहीं ले सके हैं।

5. इस प्रकार दीवार पर निर्दिष्ट 'सहमत' 'असहमत' या 'अनिश्चित' वाले स्थानों पर कुछ विद्यार्थी खड़े हो जाएंगे।

6. अब अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी से यह पूछेगा कि वह सम्बन्धित कथन से सहमत क्यों हैं? अथवा असहमत क्यों है? या स्पष्ट रूप से सहमत व असहमत क्यों नहीं?

7. उन्हें बहस नहीं करनी चाहिए अपितु दूसरे के विचारों को सुनना चाहिए। भले ही वह उसके विचारों से मेल न खाते हों।

8. अध्यापक को प्रत्येक छात्र द्वारा दिए गए प्रमुख विचार को श्यामपट्ट पर लिखना चाहिए।

9. अध्यापक को पहली प्रतिक्रिया के महत्व को समझना तथा ध्यान देना होगा और उसके अनुसार ही कार्यवाही करनी होगी। एक छात्र यदि एक बार किसी विषय पर सहमत / असहमत है तो उसे इस बात पर दृढ़ रहना होगा। चर्चा के दौरान वह अपना मत परिवर्तित नहीं करेगा।

10. अध्यापक इस बात का ध्यान रखेंगे कि छात्र अपनी कही बात पर दृढ़ रहें । दूसरों द्वारा व्यक्त विचारों का खंडन न करें।

11. अन्त में अध्यापक पूर्ण परिचर्चा का सारांश निकालेगा तथा यह स्पष्ट करेगा कि किस तरह प्रत्येक व्यक्ति अपने विचार, अनुभव व कार्य को उचित ठहराता है। चिन्तन, सम्प्रेषण तथा सामाजिक कौशलों के परिप्रेक्ष्य में उनकी दृढ़ता अथवा कमजोरी का स्पष्टीकरण भी जरूरी है।

कुछ विषय जिन पर चर्चा हो सकती है

अध्यापक प्रशिक्षण-कार्यक्रम तथा छात्र गतिविधि हेतु कुछ कथन जिन पर परिचर्चा आयोजित की जा सकती हैं निम्नलिखित हैं। दोनों स्तरों पर कितने वक्तव्यों या कथनों पर चर्चा की जा सकती है, यह उपलब्ध समय पर निर्भर है।

अध्यापक प्रशिक्षण के दौरान परिचर्चा हेतु कुछ वक्तव्य

1). उच्च माध्यमिक स्तर के सभी छात्र, लड़कियां व लड़कों को किशोरावस्था शिक्षा प्रदान की जाए।

2). उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों को एच आई वी/ एड्स के बचाव हेतु तथा अनचाहे गर्भ धारण से सुरक्षा हेतु कण्डोम का प्रयोग समझाया जाए।

3). अगर अविवाहित लोगों को यह पता चल जाता है कि वह एच आई वी से ग्रस्त है तो उन्हें विवाह नहीं करना चाहिए।

4). 21 वर्ष से कम उम्र के लोगों को शराब नहीं बेची जानी चाहिए।

5). पुरुषों को खास निर्णय लेने चाहिएं क्योंकि पुरुष कार्य करने से पहले सोचता है जबकि महिलाएं अपनी भावनाओं के अनुसार कार्य करती हैं।

6). पति को घर के कार्य एवं बच्चों की देखभाल में भागीदारी करनी चाहिए।

7). सिर्फ वैश्याएं और मादक पदार्थों का व्यसन करने वाले ही एड्स फैलाने के लिए जिम्मेदार हैं।

8). विपरीत लिंगीं के प्रति आकर्षित होने वाले किशोर अनुशासनहीन और बिगड़ैल होते हैं।

9). सभी युवाओं को सुरक्षित यौन सम्बन्ध के बारे में स्कूलों में शिक्षा देनी चाहिए।

10). एच आई वी/ एड्स से ग्रस्त औरतों को बच्चे पैदा नहीं करने चाहिएं।

11). एच आई वी से ग्रस्त छात्रों/अध्यापकों को स्कूलों में आना वर्जित होना चाहिए।

12). अगर लड़का हस्त-मैथुन करता है, उसका मस्तिष्क भ्रष्ट हो गया है और उसको इस कार्य के लिए कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए।

13). वैवाहिक जीवन तभी सफल हो सकता है जब पति प्रमुख हो और पत्नी उस पर पूरी तरह से निर्भर हो।

14). पैसे के बल पर यौन संबंध कायम करने वाले एड्स फैलाने के लिए जिम्मेवार हैं।

15). किशोरों को यौन-सम्बन्धी मामलों से अवगत कराने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ऐसा करने से उनके यौन व्यवहार में स्वच्छता आएगी।

छात्रों की गतिविधि के लिए कुछ वक्तव्य

1). किशोरों और युवाओं को शादी से पहले यौन संबंन्ध स्थापित नहीं करने चाहिए।

2). विवाह से पूर्व लड़के के लिये यौन सम्बन्ध सही है, परन्तु एक लड़की को विवाह होने तक कुंआरी होना चाहिए।

3). एड्स से ग्रस्त यदि कोई छात्र मेरी कक्षा में है तो मुझे एतराज नहीं।

4). एड्स ग्रस्त व्यक्तियों को कारखानों, रेस्तराओं और होटलों में काम करने की मनाही होनी चाहिए।

5) यदि कोई नौजवान कभी-कभी सूई द्वारा नशीले पदार्थ का सेवन कर ले तो उसे एच आई वी **(HIV)** से संक्रमित होने का खतरा नहीं।

6) धुम्रपान तथा मादक द्रव्यों का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है अतः इनका सेवन न करें।

7) मुझे अपने मित्रों की संगति में धूम्रपान तथा नशीले पदार्थों के सेवन के लिए ''न'' कहना मुश्किल लगता है।

8) लड़कियों को छेड़ना सामान्य सी बात है अतः इसे अवांछित व्यवहार नहीं मानना चाहिए।

ख) कहानी सुनाना

मूल्य स्पष्टीकरण कहानी सुनाकर भी किया जा सकता है। एक ऐसी छोटी सी कहानी जो मूल्यों से भरी हो, शिक्षक द्वारा चुनी जा सकती है और उसके लिए निम्नलिखित विधि अपनाई जा सकती है :

1. छात्रों को कहानी के प्रत्येक पात्र के विषय में या पात्रों द्वारा व्यक्त अथवा प्रदर्शित विचार और व्यवहार के विषय में अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देना।

2. छात्रों को प्रत्येक पात्र द्वारा व्यक्त विचार, प्रदर्शित व्यवहार और भूमिका का मूल्यांकन करने के लिए कहना।

3. शिक्षक श्यामपट्ट पर छात्रों के विचारों और अधिमानों को कारण सहित लिखें और उनके विचारों का सारांश निकालें।

4. शिक्षक इस बात पर विशेष ध्यान दें कि वह 'निर्णय-निरपेक्ष' रहे क्योंकि कोई भी विचार या अधिमान सही या गलत, अच्छा या बुरा, वांछनीय या अवांछनीय नहीं होता।

5. इसलिए शिक्षक को ईमानदारी से अपना विवरण तैयार करना चाहिए और ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास करना चाहिए जिसमें छात्र सभी बिन्दुओं पर लगातार सोचते रहें।

6. शिक्षक कोई भी मूल्यों से भरपूर कहानी सुना सकता है। नीचे दो कहानियां दी गई हैं। कहानियों को पढ़ने/सुनने के बाद, शिक्षक, सुझाई गई विधि के अनुसार कार्य करें -

कहानी - 1

मनोज कक्षा 11 का छात्र है। मनोज और उसके एक सहपाठी कुबेर को मनोज के पिता ने चुपके से सिगरेट पीते हुए देखा। जब वह घर लौटा, उसके पिता ने उसे डांटा और उसे समझाया कि वह कुबेर जैसे मित्रों की संगति से दूर रहे। यह पहला मौका नहीं था, जब अपने पिता के व्यवहार से उसे ठेस लगी थी। वह सोचता है कि उसके माता-पिता बहुत बार उसके निजी जीवन में हस्तक्षेप करते हैं। उन्हें उसका फिल्म देखना या अपने दोस्तों के साथ पिकनिक पर जाना पसन्द नहीं। वह यह सुनिश्चित करने में बड़े सावधान रहते कि उसका किसी लड़की के साथ कोई सम्बन्ध न हो। चाहे वह उसकी सहपाठी लड़कियां ही क्यों न हो। जब कभी भी उसे मित्रों के साथ फिल्म देखने जाना होता या उसे सहपाठी लड़कियों के साथ रहना होता वह अपने पिता के क्रोध से बचने के लिए, झूठ बोलने लगा। इसलिए उसके माता-पिता ने उसे कई बार समझाया कि वह उनके द्वारा बताए गए वर्जित टैलिविजन चैनलों के कार्यक्रम न देखे।

दूसरी ओर मनोज का मित्र कुबेर है। उसके माता-पिता उसके जीवन में बिल्कुल भी हस्तक्षेप नहीं करते जबकि वह पिछली परीक्षा में असफल रहा। उसके माता-पिता उसे डांटते भी नहीं। असल में वह उसे अवसाद से बाहर निकालना चाहते थे। कुबेर कहता है कि वह सिगरेट भी पीता है और कभी कभी शराब भी पीता है। माता- पिता उसके किसी भी निर्णय का विरोध नहीं करते। यह जानते हुए भी कि कुबेर अपनी सहपाठी लड़कियों के साथ काफी समय बिताता है, उन्हें इस बात की कोई फिक्र नहीं। कुबेर कमरे में लगे हुए टैलिविजन सैट का भरपूर आनन्द उठाता है और अपने माता-पिता के हस्तक्षेप के बिना अपनी पसन्द के प्रोग्राम देखता है। मनोज अपनी तुलना कुबेर से कर हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है। इस स्थिति में वह कुबेर से ईर्ष्या करने लगा।

कहानी को ऊँचा पढ़कर सुनाने के बाद अध्यापक छात्रों से निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर उनके विचार जानेगा और उनके औचित्य का विश्लेषण करेगा :

1. क्या मनोज के माता-पिता का उसे सिगरेट पीने के लिए डांटना औचित्यपूर्ण है?

2. मनोज ऐसा महसूस करता है कि उसके माता-पिता काफी हद तक उसके निजी जीवन में हस्तक्षेप करते हैं। क्या आप उससे सहमत हैं?

3. क्या आप सोचते हैं कि मनोज के माता-पिता को उसे इसी तरह डांटते-फटकारते रहना चाहिए जिससे कि वह बाद में एक जिम्मेदार वयस्क बने?

4. क्या आप ऐसा सोचते हैं कि जब मनोज अपने माता-पिता के क्रोध से बचने के लिए झूठ बोलता है तो वह सही करता है?

5. क्या कुबेर के माता-पिता एक जिम्मेदार माता-पिता की तरह बर्ताव कर रहे हैं?

6. बिना अपने माता-पिता के हस्तक्षेप के क्या कुबेर का सही ढंग से विकास हो रहा है?

7. आप के अनुसार, किशोरावस्था में बच्चों के साथ माता-पिता को किस तरह का व्यवहार करना चाहिए ताकि उनका उचित विकास हो :

   - जब छात्र अपने विचार प्रकट करें, शिक्षक को छात्रों द्वारा प्रकट किए गए मुख्य विचारों को श्यामपट्ट पर लिखना चाहिए।
   - शिक्षक छात्रों व्यक्त विचारों पर मूल्यपूरक निर्णय नहीं देना चाहिए।
   - अंत में शिक्षक छात्रों द्वारा मूल्यगत विषयों पर प्रकट किए गए विविध विचारों का सारांश प्रस्तुत करे।

कहानी - 2

राहुल जब बच्चा ही था तब उसके पिता स्वर्ग सिधार गए। अब वह एक नौजवान है और अपनी माता के साथ रहता है। वह एक कारखाने में एक उच्च अधिकारी है। सोनल एक आकर्षक युवती है और विज्ञान-अनुसन्धान प्रयोगशाला में काम करती है। वह होस्टल में रहती है जो कि राहुल के घर के पास है। राहुल और सोनल बहुत गहरे मित्र हैं और दोनो ही एक दूसरे से विवाह के इच्छुक हैं।

लेकिन कुछ कठिनाईयां हैं। राहुल एचआईवी पौजिटिव है। कारखाने में होने वाली नियमित जांच के दौरान इसका पता चला। कारखाने के प्रबन्ध निर्देशक ने उसे नौकरी से निकालने का निश्चय कर लिया, क्योंकि वह एचआईवी से ग्रसित था।

सोनल भी एक मुश्किल में है। वह गर्भवती है। वह विक्रम से प्यार करती थी जो अनुसंधान प्रयोगशाला में उसका सहकर्मी था। जिसके परिणामस्वरूप वह गर्भवती हो गई। दो मास पहले विक्रम विदेश चला गया। उसके जाने के एक मास के बाद ही उसे पता चला कि उसने उसे धोखा दिया। सोनल गम्भीर अवसाद की स्थिति में चली गई। इसी बीच वह राहुल के करीब आई और दोनों एक दूसरे को पसन्द करने लगे। राहुल यह नहीं जानता था कि सोनल गर्भवती है और न ही सोनल जानती है कि राहुल एचआईवी से संक्रमित है। डाक्टर खुराना, जिनसे दोनों ने ही परामर्श लिया है जानते हैं कि राहुल एचआईवी से पीड़ित है और सोनल गर्भवती है। परन्तु वे दोनों के सामने इसका रहस्योदघाटन नहीं करते। राहुल की मां यह जानकर प्रसन्न है कि राहुल और सोनल एक दूसरे से विवाह करना चाहते हैं। यद्यपि वह जानती है कि उसका बेटा एचआईवी से पीड़ित है। फिर भी वह राहुल को मजबूर करती है कि वह सोनल से जितनी जल्दी हो सके विवाह कर ले ताकि उनको एक बच्चा मिल जाए।

- जोर से कहानी पढ़ने के बाद शिक्षक, छात्रों को कहानी के सभी पात्रों के व्यवहार को 1-5 क्रम में लिखने के लिए कहें। जिस पात्र का व्यवहार सबसे अच्छा हो उसे क्रम एक दें और जिसका व्यवहार सबसे बुरा हो उसे क्रम पांच दें। यथा -

चरित्र	क्रम				
राहुल					
सोनल					
विक्रम					
डाक्टर खुराना					
राहुल की मां					
प्रबन्ध निदेशक					

- एक बार छात्रों द्वारा क्रम दे दिए जाएँ तो शिक्षक छात्रों से हर चरित्र को दिए गए क्रम का औचित्य सिद्ध करने को कहे।

- अध्यापक श्यामपट्ट पर छात्रों द्वारा हर चरित्र के समर्थन में कही गई मुख्य बातों को लिखें।
- शिक्षक, छात्रों द्वारा कही गई बातों पर मूल्यपूरक निर्णय न दे।
- अन्त में, शिक्षक मूल्यगत विषयों पर छात्रों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न विचारों का संक्षेप प्रस्तुत करे।

पुनर्निवेशन (Feedback)

हर बार गतिविधि के, समापन पर पुनर्निवेशन के लिए कुछ विशेष पग उठाने चाहिए। सम्बन्धित शिक्षक को निम्नानुसार विवरणिका तैयार करनी चाहिए :

1. गतिविधि को कैसे नियोजित किया गया था? क्या नियोजन में छात्रों को सम्मिलित किया गया था?
2. क्या इस गतिविधि को आयोजित करते समय उपरलिखित पगों को ध्यान में रखा गया?
3. गतिविधि में कितने छात्रों (कक्षानुसार), शिक्षकों और अन्य लोगों ने भाग लिया?
4. क्या छात्रों ने चर्चा में सक्रियता से भाग लिया? क्या उन्होंने मूल्यगत विषयों पर अपने पक्ष दृढ़ता से रखे और क्या वे अपने मत तार्किक रूप से रख सके।
5. क्या वार्तालाप से यह प्रतीत हुआ कि छात्रों ने विषय विशेष से संबंधित विभिन्न पहलुओं, मूल्यों और विकल्पों को गहनता से पहचाना?
6. क्या छात्रों ने कहानी के अनुरूप मूल्यों को विविध संदर्भों में समझा या कि मूल्यों को रूढ़ अर्थों में लिया।
7. वार्तालाप में भाग लेते हुए विभिन्न छात्रों ने कौशलों यथा- वैचारिक, सम्प्रेषण, निर्णय लेने की क्षमता और समस्या समाधान कौशलों का प्रदर्शन किया ?